Ch.6. मातृभूमि

क्षमामयी तू ---------- जननी तू प्राण है।

संदर्भ- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिंदी 'वाटिका' की मातृभूमि नामक कविता से लिया गया है।

प्रसंग- उपरोक्त काव्यांश में कवि ने मातृभूमि के मानवीय गुणों का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि कहता है, हे माँ, आप सरलता से क्षमा कर देने वाली, दयालु, कृपालु अमृत प्रदान करने वाली, ममता की प्रतिमूर्ति, प्रेम से युक्त हो। आप धन ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, जग का पालन करने वाली, दुखों को दूर करने वाली, भय मुक्त करने वाली, शांति युक्त, सुख प्रदान करने वाली हैं।

हे शरण देने वाली देवी आप सबकी रक्षा करने वाली हैं, हे जन्मदात्री मातृभूमि हम सब आपकी संतान हैं। आप हमें जन्म देने वाली सर्वस्व हैं।

प्रश्न- कविता में कवि ने मातृभूमि को सर्वेश की सगुण मूर्ति क्यों कहा है?

उत्तर- कवि के अनुसार मातृभूमि सर्वगुण संपन्न, सर्वशक्तिमान है। इसीलिए उसे सर्वेश की सगुण मूर्ति कहा है?

प्रश्न2- हमारी मातृभूमि एक जननी के समान शिशु का पालन किस प्रकार करती है?

उत्तर- जिस प्रकार जन्म देने वाली हमारी माँ हमारी सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति करती है। ठीक वैसी ही हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप मातृभूमि हमें सभी प्राकृतिक वस्तुएँ प्रदान कर हमारा पालन करती है।